'निष्कासन' उपन्यास में चित्रित मनोवैज्ञानिक यथार्थ

डॉ. राजेंद्रसिंह आ. चौहान
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक,
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, बलभीम कॉलेज, बीड.

हिन्दी की अग्रणी महिला कथाकार मालती जोशी गंभीर प्रकृति एवं आदर्श की मूरत है। श्रीमती मालती जोशी सजीव व्यक्तित्व की स्वामी है। वे संगीत और गीत की जानकार है। ऐसे बहुमुखी प्रतिभा की स्वामिनी हैं।

उनका 'निष्कासन' उपन्यास मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद से सम्बन्धित है। इस उपन्यास में विधवा होने का दु:ख घुटन, तडप का कम अपितु पुनर्विवाह के बाद मन की व्यथा का चित्रण अधिक है। आदमी अपनी संतान के लिए दिन-रात तडपता है परन्तु उसी संतान से उसे कितनी उपेक्षा मिलती है इन बातों का अंकन बडी निर्ममता में किया है।

नरेन्द्र की मृत्यु असमय हो गयी। वह अपने पीछे विधु-जैसी गुडिया का छोड गया। वैसे नायिका का वैवाहिक जीवन सुखद था। इसलिए उसका मनोबल कभी नहीं टूटा। उसका जाना एक कसक, एक पीडा पीछे छोड गया था। दो बच्चों को मृत अवस्था में जन्म देने के बाद सीजेरियन का अंतिम चांस था। वह जान गयी थी कि अब वह और संतान को जन्म नहीं दे पायेगी। लडके की आस बनी रही। उसकी माँ ने तब उसे समझाया था कि "जैसे ममता बिटिया करती है, ऐसी लडके थोडे ही करेंगे। लडकी कहीं भी रहेगी, तो मेरे लिए आठ-आठ आँसू रोयेगी। लडके तो घर में रहेंगे, तब भी आँख उठाकर नहं देखेंगे।' उसका प्रमाण नरेन्द्र के अचानक उठ जाने पर मिला। नौ. वर्ष की छोकरी ने उसे माँ की तरह सहारा दिया। पिता की मृत्यु का दुख: किसी दार्शनिक की तरह पीकर वह माँ की देखभाल करती रही। "शोक-प्रदर्शन करने के लिए आनेवाली भीड से, रास्ते पर लोगों की करूण दृष्टि से, नाते-रिश्तेदारों के व्यंग्य-बाजों से बडे कौशल से मुझे इन सबसे बचाती हुई वह उबार लायी थी। उसकी मजबूत बांहों का सहारा पाकर मैंने पतवार फिर थाम ली थी और जिन्दगी बडे, आराम से पार हो जा रही थी।"[2]

वही लडकी एक दुर्घटना से इतनी बदल गयी कि माँ और बेटी का रिश्ता ही समाप्त हो गया। " विधु के अवचेतन में तुम्हारे (माँ) के कारण कैसी कैसी ग्रंथियाँ पड गयी हैं। शायद इसीलिए वह तुमसे इतनी नफरत करने लगी है।"[3] डॉक्टर के दिखाने के बाद उसने भी यही कहा था- "माँ को लेकर इके मन में कुछ कॉम्पलेक्स है, गांठ है इसी से माँ के सामने पडते ही यह अपना संतुलन खो बैठती है।"[4] और ये सब गंगाधर के कारण हुआ। गंगाधर बरेली में उनका पडौसी था। परेदस में आकर यह नरेन्द्र को बडा भाई मानता रहा। जब तक वह अपने पद पर था अफसर उससे गाँव का भी मंगवाते थे, बेटियों की शादियों में सरकारी पेट्रोल फुंकवाते थे। उसकी जीप में बैठकर यहाँ - हयाँ जाते थे हर तीसरे दिन उसके यहाँ डिनर पर आते थे परंतु जब वह मुअत्तिल हुआ सबने आँखे फेर ली। अगर विधु की जगह और कोई होता, तो मेरी सारी सहानुभूति गंगाधर के साथ होती।"[5] परन्तु विधु के साथ किया गया उसका पाशविक अत्याचार देखकर उसके मन में बदले की आग जाग जाती है। विधु-को अनावृत शरीर पर गंगाधर की हैवानियत के चिह्न उसे धुएँ की लकीर की तरह घेरे हुए थे। उसे दु:ख इस बात का था कि "बेचारी अब कभी जान नहीं पायेगी कि पुरूष का पहला स्पर्श कितना मंगल, कितना पवित्र, कितना रोमांचक होता है। इस दुर्दिन की स्मृति हमेशा एक काली छाया की तरह उसके अनुभवों के आसपास मंडराती रहेगी।"[6]

विधु ने भी उसे ऐसा सबक सिखाया था कि वह जिन्दगी भर याद रखें। उसने उसे खडाऊ से पीटते हुए यह बता दिया था कि वह कोई मिट्टी का लोंदा नहीं है। उसका परिणाम यह हुआ कि गंगाधर ने सीलिंग फैन से लटककर आत्महत्या कर ली। सभी ने यही जाना कि सस्पेंड होने का दु:ख, बीवी का लड झगडकर अलग होने का दु:ख , उनसे ऐसी हरकत करवा गया। विधु को जब इस बात का पता चला तो उसने साफ कहा चाचा ने मेरी वजह से आत्महत्या की है। माँ डर जाती है कि यदि किसी ने सुन लिया तो गजब हो जायेगा। विधु के मन में यह बात बैठ गयी किउसकी वजह से एक हँसता-खेलता आदमी दुनिया से

Scanned by CamScanner